पत्र सूचना शाखा
(मुख्यमंत्री सूचना परिसर)
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0

मुख्यमंत्री श्री गुरु नानक देव जी महाराज के 557वें प्रकाश पर्व कार्यक्रम में सम्मिलित हुए, श्री गुरुग्रन्थ साहिब के सामने मत्था टेका

जब तक भारत सिख गुरुओं के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव रखेगा, दुनिया की कोई ताकत भारत का बाल भी बांका नहीं कर पाएगी : मुख्यमंत्री

गुरु नानक देव जी ने अपने जीवन और संदेश से सम्पूर्ण मानवता को अज्ञान और अंधकार से निकालकर ज्ञान एवं प्रकाश का मार्ग दिखाया

कार्तिक पूर्णिमा पर शुकतीर्थ, गढ़मुक्तेश्वर, तिगरी, प्रयागराज, फर्रुखाबाद, अयोध्या और काशी में लाखों श्रद्धालु स्नान कर रहे

गुरु नानक देव जी महाराज के 'एक ओंकार' का मंत्र सम्पूर्ण समाज को एकता, समानता और परस्पर सम्मान के सूत्र में बांधने की प्रेरणा देता

गुरु नानक देव जी महाराज ने अपने अनुयायियों और श्रद्धालुओं को नाम जपो, किरत करो और वंड छको का संदेश दिया

सामूहिक रूप से कीर्तन करने से समाज में सकारात्मक ऊर्जा और एकता का संचार होता

लंगर की परम्परा सामाजिक समानता, सेवा, समरसता और भाईचारे का अत्यन्त पवित्र उदाहरण

वीर बाल दिवस के आयोजन से युवाओं और विद्यार्थियों को नई प्रेरणा मिल रही

सिख गुरुओं के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव बनाए रखें, उनके पवित्र विचारों एवं शिक्षाओं को अपने जीवन में आत्मसात करें

लखनऊ : 24 नवम्बर, 2026

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी आज यहां डी0ए0वी0 कॉलेज, प्रांगण में श्री गुरु नानक देव जी महाराज के 557वें प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। उन्होंने श्री गुरुग्रन्थ साहिब के सामने मत्था टेका। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री जी को सरोपा एवं कृपाण भेंट कर स्वागत किया गया।

मुख्यमंत्री जी ने प्रदेशवासियों को प्रकाश पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हम सभी इतनी भव्यता और उत्साहपूर्ण वातावरण में गुरु नानक देव जी महाराज के प्रकाश पर्व के आयोजन के साक्षी बन रहे हैं। गुरु नानक देव जी ने अपने जीवन और संदेश के माध्यम से सम्पूर्ण मानवता को अज्ञान और अंधकार से निकालकर ज्ञान एवं प्रकाश की ओर ले जाने का मार्ग दिखाया। उनका संदेश था कि अज्ञान पर ज्ञान और अधर्म पर धर्म की विजय होनी चाहिए।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि आज का दिन अत्यन्त पवित्र है। वह प्रातः चार बजे से ही प्रदेश के अलग–अलग स्थानों से व्यवस्थाओं एवं श्रद्धालुओं की संख्या की जानकारी प्राप्त कर रहे थे। मुजफ्फरनगर जनपद स्थित शुकतीर्थ में लाखों श्रद्धालु माँ गंगा में स्नान कर रहे हैं। हापुड़ जिले के गढ़मुक्तेश्वर में प्रातःकाल से अब तक लगभग 15 लाख श्रद्धालु स्नान कर चुके हैं। अमरोहा के तिगरी में भी 15 लाख से अधिक श्रद्धालु स्नान कर चुके हैं। प्रयागराज और फर्रुखाबाद में भारी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे हैं। अयोध्या और काशी में भी लाखों श्रद्धालु स्नान कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि आज कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर काशी की सुप्रसिद्ध देव दीपावली का आयोजन होना है, जिसमें लाखों दीपक प्रज्ज्वलित किए जाएंगे। मान्यता है कि भगवान शिव ने आज ही के दिन त्रिपुरासुर का वध कर इस धरती को आतंक से मुक्त किया था। इसी परम्परा के अनुरूप गढ़मुक्तेश्वर, काशी तथा अन्य धार्मिक स्थलों पर कार्तिक पूर्णिमा के आयोजन हर्षोल्लास एवं श्रद्धा के साथ किए जाते हैं। कार्तिक पूर्णिमा का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि इसी पावन तिथि पर साहिब श्री गुरु नानक देव जी महाराज का प्रकाश पर्व भी मनाया जाता है।

हमें उस दौर को याद करना चाहिए, जब मानवता के इस महान प्रकाशपुंज ने अपने संदेश को लेकर विभिन्न स्थानों की यात्राएं की थीं। उस समय आवागमन के साधन और संसाधन भी उपलब्ध नहीं थे। समाज जाति, छुआछूत और अस्पृश्यता के नाम पर अनेक प्रकार के भेदभावों में बंटा हुआ था। एक ओर समाज में बिखराव था, तो दूसरी ओर बाहरी आक्रमण और विदेशी हमलों की चुनौतियां थीं। ऐसे कठिन समय में गुरु नानक देव जी महाराज ने सम्पूर्ण मानवता को 'एक ओंकार' का मंत्र दिया।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि गुरु नानक देव जी ने बताया कि ईश्वर एक है और हम सभी उसकी संतान हैं। इसलिए प्रत्येक मनुष्य समान सम्मान का अधिकारी है। विदेशी आक्रमणों और सामाजिक विभाजन की परिस्थितियों में समाज को एकजुट करने के लिए दिया गया उनका यह संदेश उस समय भी प्रासंगिक था और आज भी इसकी सार्थकता बनी हुई है। 'एक ओंकार' का मंत्र सम्पूर्ण समाज को एकता, समानता और परस्पर सम्मान के सूत्र में बांधने की प्रेरणा देता है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि गुरु नानक देव जी महाराज अपने अनुयायियों और श्रद्धालुओं को तीन प्रमुख संदेश देते थे–'नाम जपो, किरत करो और वंड छको'। अर्थात ईश्वर का नाम स्मरण करो, ईमानदारी एवं परिश्रम से आजीविका अर्जित करो और

मिल–बांटकर भोजन करो। नाम जपने और कीर्तन करने से व्यक्ति के भीतर आध्यात्मिक चेतना जागृत होती है तथा अज्ञानता दूर होती है। सामूहिक कीर्तन से समाज में एक शक्ति का संचार होता है। इससे व्यक्ति के मन में नकारात्मक अथवा नास्तिकता का भाव उत्पन्न नहीं होता और समाज में सामूहिकता की भावना मजबूत होती है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस में श्रद्धा के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा है–'श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्' अर्थात श्रद्धावान को ही ज्ञान प्राप्त होता है। गुरु नानक देव जी महाराज भी कीर्तन के माध्यम से इसी आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने का संदेश देते थे। सामूहिक रूप से कीर्तन करने से समाज में सकारात्मक ऊर्जा और एकता का संचार होता है। उनका तीसरा संदेश 'वंड छको' अर्थात मिल–बांटकर खाने का है। इसका आशय है कि समाज में कोई भी व्यक्ति उपेक्षित न रहे और सभी एक–दूसरे के साथ मिलकर जीवन व्यतीत करें।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि जब भी वह गुरुद्वारों में जाते हैं और वहां सभी लोगों को एक साथ लंगर छकते हुए देखते हैं, तो गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं का जीवन्त स्वरूप सामने दिखाई देता है। लंगर में किसी व्यक्ति की जाति, मत या मजहब नहीं पूछा जाता। प्रत्येक व्यक्ति एक साथ पंगत में बैठकर पूरे सम्मान के साथ भोजन करता है। किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं होता। लंगर की यह परम्परा सामाजिक समानता, सेवा, समरसता और भाईचारे का अत्यन्त पवित्र उदाहरण है, जो आज भी समाज को एकजुट करने का कार्य कर रही है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि साहिब श्री गुरु नानक देव जी महाराज ने आध्यात्मिकता के वास्तविक स्वरूप को समाज के सामने रखा। गुरु नानक देव ने बताया कि सच्ची आध्यात्मिकता अन्याय के विरुद्ध निर्भीक होकर खड़े होने की प्रेरणा देती है। आध्यात्मिकता का अर्थ पलायन करना नहीं है। यदि कोई व्यक्ति सामने अन्याय और अत्याचार कर रहा है तो केवल अपने स्वार्थ में डूबकर मौन बने रहना आध्यात्मिकता नहीं हो सकती। सच्ची आध्यात्मिकता वह है, जो किसी भी अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध दृढ़ता से खड़े होकर उसका मुकाबला करने का साहस प्रदान करे।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि कालांतर में सिख गुरुओं का त्याग और बलिदान इसी आध्यात्मिक चेतना की मिसाल बना। गुरु तेग बहादुर जी का बलिदान, गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज और उनके चारों साहिबजादों का बलिदान तथा विदेशी आक्रांताओं से मुकाबला करते हुए सिख वीरों का संघर्ष इसी परम्परा का हिस्सा है। आजादी की लड़ाई

में सिख वीरों और क्रान्तिकारियों का योगदान भी सिख गुरुओं की शिक्षाओं एवं प्रेरणा से उत्पन्न राष्ट्रभक्ति और त्याग की भावना का परिणाम था।

जब हम गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज का स्मरण करते हैं, तो उनके चारों साहिबजादों के अद्वितीय बलिदान की स्मृतियां भी हमारे सामने आती हैं। बाबा अजीत सिंह जी, बाबा जुझार सिंह जी, बाबा जोरावर सिंह जी और बाबा फतेह सिंह जी ने अत्यन्त कम आयु में धर्म की रक्षा के लिए अपना बलिदान स्वीकार किया। मुख्यमंत्री जी ने उनकी क्रमशः 14, 11, 9 और 7 वर्ष की आयु का उल्लेख करते हुए कहा कि इतनी कम आयु में भी उन्होंने विदेशी हुकूमत और आक्रांताओं के सामने अपना सिर नहीं झुकाया। उन्होंने भारत का सिर ऊंचा रखा और अपनी गुरु परम्परा के प्रति अडिग रहते हुए निर्भीकता के साथ धर्म और राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। यह हम सभी के लिए गौरव और प्रेरणा का विषय है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि सिख गुरुद्वारों के सहयोग से गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज के चारों साहिबजादों के बलिदान की स्मृति को चिरस्थायी बनाने तथा नई पीढ़ी को उनके त्याग एवं शौर्य से परिचित कराने के उद्देश्य से 26 दिसम्बर को वीर बाल दिवस के रूप में आयोजित करने की पहल की गई। मुख्यमंत्री आवास में विशेष रूप से दो प्रकार के आयोजन होते हैं। एक, सात वर्ष पूर्व साहिब श्री गुरु नानक देव जी महाराज के 550वें प्रकाश पर्व का आयोजन हुआ था और दूसरा, वीर बाल दिवस का कार्यक्रम। वीर बाल दिवस के आयोजन की पहली शुरुआत मुख्यमंत्री आवास से हुई थी। आज उन्हें प्रसन्नता होती है कि पूरे देश में इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

बाबा अजीत सिंह, बाबा जुझार सिंह, बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह के जीवन एवं बलिदान को स्मरण करते हुए विभिन्न स्थानों पर प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं। यह देखकर उन्हें संतोष होता है कि जिस पहल की नींव लखनऊ में पड़ी थी, वह आज राष्ट्रीय स्तर पर एक व्यापक आयोजन का स्वरूप ले चुकी है। वीर बाल दिवस के आयोजन से युवाओं और विद्यार्थियों को नई प्रेरणा मिल रही है। इससे उनमें राष्ट्र के प्रति समर्पण, धर्म और संस्कृति के प्रति सम्मान तथा अन्याय के विरुद्ध खड़े होने का साहस विकसित होता है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि सिख गुरुओं की यात्राएं किसी एक स्थान या क्षेत्र तक सीमित नहीं थीं। उन्होंने भारत के विभिन्न हिस्सों के साथ–साथ भारत के बाहर तक

यात्राएं कीं। उस समय साधनों के अभाव के बावजूद उन्होंने पदयात्राएं कीं और अपनी आध्यात्मिक शक्ति के बल पर सीमाओं को पार किया। उनके भीतर अध्यात्म की शक्ति के साथ–साथ देश और धर्म के लिए कुछ कर गुजरने की दृढ़ इच्छाशक्ति भी थी।

आज इस पावन अवसर पर हम सभी का दायित्व है कि सिख गुरुओं के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव बनाए रखें। उनके पवित्र विचारों एवं शिक्षाओं को अपने जीवन में आत्मसात करें और उनके योगदान के बारे में वर्तमान पीढ़ी को लगातार अवगत कराते रहें। जब तक भारत सिख गुरुओं के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव रखेगा, दुनिया की कोई ताकत भारत का बाल भी बांका नहीं कर पाएगी।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि केवल इन शिक्षाओं को सुनना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि इन्हें अपने जीवन में आचरण के रूप में भी उतारना होगा। गुरु नानक देव जी महाराज तथा अन्य सिख गुरुओं ने जो संदेश और आध्यात्मिक प्रकाश हमें प्रदान किया है, उसे अपने जीवन का हिस्सा बनाकर ही हम समाज में एकता, सद्भाव और राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना को और अधिक मजबूत कर सकते हैं।

मुख्यमंत्री जी ने साहिब श्री से प्रार्थना की कि लखनऊ के सभी श्रद्धालुओं को भी कभी ननकाना साहिब और करतारपुर साहिब जाकर वहां आयोजित होने वाले बड़े धार्मिक आयोजनों का हिस्सा बनने का अवसर प्राप्त हो।

कार्यक्रम को कृषि राज्य मंत्री श्री बलदेव सिंह ओलख तथा उत्तर प्रदेश अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य श्री परविंदर सिंह ने भी सम्बोधित किया।

इस अवसर पर सिख समाज के गणमान्य व्यक्ति, ग्रंथी, ज्ञानी एवं श्रद्धालुगण उपस्थित थे।

————————

PN-CM-Guru Nanak Prakash Parv-24 November, 2026